इकाई 11 रूस में औद्योगिक पूंजीवाद

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यह देख सकेंगे कि किन कारकों के कारण रूस में औद्योगिक पूंजीवाद का विकास देर से हुआ और पर्यावरणात्मक और संस्थागत पिछड़ेपन की इसमें क्या भूमिका रही।
- आप जान पाएंगे कि इन कमियों को दूर करने का जिम्मा किस प्रकार महत्वाकांक्षी राज्य और अत्यधिक बोझ से दबे किसानों के कंधे पर आ गया।
- आप बता सकेंगे कि इन कमियों के बावजूद रूस में सभी उद्योग किस प्रकार उच्च वृद्धि दर को संभव बना सके, और
- आप जान सकेंगे कि किस प्रकार उपभोक्ता वस्तुओं के लिए सीमित बाजार होने के कारण औद्योगिक उन्नति का रुझान मुख्य रूप से भारी उद्योग की ओर ही रहा।

11.1 प्रस्तावना

रूस में औद्योगिक पूंजीवाद की प्रगति 1890 के दशक में हुई। रूस इस मामले में अपने मुख्य आर्थिक और राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों इंगलैंड, फ्रांस और जर्मनी से पिछड़ गया। इन देशों में औद्योगीकरण शुरू होने के कई दशकों बाद रूस में औद्योगिक पूंजीवाद का उदय हुआ। रूस में देर से औद्योगीकरण होने के कई कारण हैं जिसमें वहां की पर्यावरणात्मक विशेषताएं और संस्थागत पिछड़ेपन भी जिम्मेदार हैं। परिणामस्वरूप रूस में राज्य ने स्वयं औद्योगिक पूंजीपति की भूमिका निभाई जो पश्चिमी अर्थव्यवस्था में नहीं था।

रूसी औद्योगीकरण देर से शुरू हुआ। इसका उन्हें लाभ मिला और उन्होंने नई औद्योगिक रणनीतियां शुरू नहीं कीं बल्कि प्रचलित रणनीतियां अपनाईं। उद्यमशीलता के लिए राज्य और विदेशी निवेशकों, पूंजी और बाजारों पर आश्रित रहने का रूसी पूंजीपतियों को नुकसान उठाना भी पड़ा। इस प्रकार औद्योगीकरण देर से होने के कारण आश्रितता इसकी नियति बन गई।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक रूसी राज्य के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वह अपने अपर्याप्त संसाधनों के बावजूद यूरोप की एक बड़ी शक्ति बनने की महत्वकांक्षा रखता था। अपने पूरे इतिहास में और सोवियत युग में भी रूसी औद्योगीकरण राजनैतिक उद्देश्यों से प्रेरित रहा। उन्नीसवीं शताब्दी में रूस की अपेक्षा यूरोपीय अर्थव्यस्था की वृद्धि दर हमेशा ऊंची रही क्योंकि वहां औद्योगीकरण काफी पहले हो चुका था और आर्थिक विकास ज्यादा संतुलित था। इसके अलावा वहां कृषि व्यवस्थाओं और औद्योगिक क्षेत्रों के भीतर और उनके बीच भी बेहतर संतुलन था। औद्योगीकरण में बिलंब होने और अनुकूल माहौल न होने के कारण रूस अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ सका। राष्ट्र राज्यों की राजनैतिक ताकत उनकी आर्थिक समृद्धि से मापी जाती थी। औद्योगिक क्षेत्र में रूस न चाह कर भी पश्चिमी यूरोप पर निर्भर रहा और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में उसकी राजनैतिक आवाज बुलंद न हो सकी।

पश्चिमी यूरोप में जहां औद्योगीकरण का उत्तरदायित्व औद्योगिक क्षेत्र ने संभाला वहीं रूस में इसका अधिकांश बोझ किसानों के कंधों पर पड़ा। इसके लिए उन्हें भारी करों का भुगतान करना पड़ा और इन करों के भुगतान के लिए अनाज का निर्यात करना पड़ा तथा अपनी उपभोक्ता संबंधी जरूरतों को स्थगित करना पड़ा। अन्तिम कारक का संबंध मुख्य रूप से रूसी औद्योगिक पूंजीवाद की अपनी विशिष्टता से है क्योंकि यहां हल्के उद्योगों की अपेक्षा भारी उद्योगों पर ही जोर दिया गया था।

11.2 रूस के पिछड़ेपन के पर्यावरण संबंधी कारक

रूस का भौगोलिक क्षेत्र काफी बड़ा था और यहां रहने वाले लोगों का संकेंद्रण और संख्या बहुत कम थी। रूस के पिछड़ेपन का मुख्य कारण यही माना जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी तक जनसंख्या इतनी कम थी और इससे होने वाली उत्पादकता भी इतनी नागण्य थी कि राज्य का उस पर कर लगाने का कोई मतलब नहीं था। इसके अलावा रूस का कच्चा माल दक्षिण और पूर्व के हिस्सों में पाया जाता था जबकि प्रशासकीय इलाके और जनसंख्या बहुल क्षेत्र मध्य और उत्तरी रूस में केंद्रित थे। गर्मी के दिनों में नदियों और जाड़े के दिनों में सड़क से धीमा यातायात हो सकता था। इससे संसाधनों के परिवहन की लागत काफी हो जाती थी और हर मौसम में परिवहन संभव भी नहीं था। रेलवे के आगमन के बाद ही इस स्थिति में सुधार हो सका।

उत्तर की ओर ऊपरी हिस्से में बसे होने के कारण रूस की जलवायु काफी कठिन और पीड़ादायक थी। विश्व के अन्य देशों के मुकाबले पूरे वर्ष में कम समय के लिए खेती की जा सकती थी। यूरोप की अपेक्षा यहां अनाज का उत्पादन कम होता था और चरागाह भी कम समय के लिए उपलब्ध होता था जिससे अनाज और पशुधन उत्पाद् का अधिशेष स्तर कम होता था। किसानों की आय और औद्योगिक वस्तुओं को खरीदने की शक्ति कम रही और साम्राज्य में व्यापार काफी सीमित रहा क्योंकि अधिकांश उत्पादों का विनिमय की अपेक्षा उपभोग ज्यादा होता था। किसानों के पास पूंजी न होने के कारण वे बेहतर उर्वरक, बीज और मशीन नहीं खरीद पाते थे।

उत्तरी यूरोप की भूमि अनुपजाऊ थी और यहां की मिट्टी अनुर्वरक थी। चारों ओर घने जंगल, दलदल और कई नहर थे जिसके कारण यहां उन्नत कृषि संभव नहीं थी। इसे देखते हुए रूसी शासकों ने उपजाऊ भूमी की ओर अपना रुख किया और आक्रमण कर वहां अपना उपनिवेश स्थापित किया। वे पूरब की ओर उराल और साइबेरिया तक, दक्षिण की ओर काला सागर के तटवर्ती इलाकों तक और दक्षिण पूर्व में कॉमौस और कैसपियन तक के इलाकों को उन्होंने अपने कब्जे में कर लिया। वस्तुत: औपनिवेशिकरण रूसी इतिहास का एक हिस्सा बन गया। इसी से रूसी इतिहासकार वी. ओ. क्लूसेवेस्की का मानना था कि "रूस एक ऐसा देश है जो खुद को उपनिवेशिकृत करता है"।

चूंकि कच्चा लोहा और इंधन, कोयले जैसे उद्योग के लिए जरूरी ऊर्जा स्रोत रूसी साम्राज्य के बिलकुल अंतिम सीमांत पर स्थित थे इसलिए औद्योगीकरण को रेलवे का इन्तजार करना पड़ा। इसके पहले यूरोप की अपेक्षा परिवहन की दर अधिक होने के कारण रूस में अधिकांश उत्पादित वस्तुओं की प्रति इकाई उत्पादन लागत अधिक होती थी। कोक की मदद से कच्चे लोहे को पिघलाने की पद्धति का इस्तेमाल करने के कारण इंगलैंड और अन्य यूरोपीय देशों में औद्योगिक विकास तेजी से हुआ। क्रिबोई रोग के लोहे के क्षेत्र और डोनेट्स के कोयला खदान उन क्षेत्रों में पड़ते थे जिन्हें 1730 के दशक में तुर्कों से छीना गया था। परंतु इन इंधनों का उपयोग करने वाले कारखाने मास्को के समीप केंद्रीय औद्योगिक क्षेत्र और आगे उत्तर की ओर सेंट पीटर्सबर्ग में स्थित थे। 1860 के दशक के बाद क्रिबोई रोग और डोनेट्स को रेलवे लाइन से जोड़ा गया और उसके बाद उन्हें रेलवे लाइन के जरिए पूरे देश से जोड़ा गया। अभी तक रूसी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से अनाज, इमारती लकड़ी और वन उत्पादों पर आधारित थी। यही उनका प्रमुख प्राकृतिक संसाधन था जिसका वे निर्यात भी करते थे।

11.3 कृषि परम्परा

1913 में रूस की 85% जनता गांवों में निवास करती थी जबकि रूस की राष्ट्रीय आय में कृषि का हिस्सा केवल आधा ही था। शहरों में प्रतिव्यक्ति आय कम थी परंतु फिर भी गांवों की तुलना में दोगुनी थी। देश का आर्थिक विकास मुख्य रूप से कृषि की उन्नति पर निर्भर था। हालांकि रूस में देर से औद्योगिक विकास का मुख्य कारण अधिकांशत: कृषि क्षेत्र की प्रमुखता को ही माना जाता है।

1860 से लेकर 1913 तक कृषि उत्पादन में 2% की वृद्धि हुई जबकि जनसंख्या में प्रतिवर्ष 1.5% की दर से वृद्धि हुई। यह वृद्धि कृषि क्षेत्र के विस्तार और अधिक उपज देने वाले फसलों के उपयोग के कारण हुआ। परंतु कृषीय उत्पादकता या कृषि में संलग्न प्रति व्यक्ति आय में बहुत थोड़ी सी वृद्धि हुई और 1913 तक अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इनका स्तर काफी नीचे रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान मुख्य रूप से अनाज का उत्पादन होता रहा। 1913 तक 90% भूमि पर अनाजों की खेती की जाती थी परंतु कुल कृषि उत्पाद में अनाज का हिस्सा केवल आधा ही था। इसके अलावा कृषीय क्षेत्र में पशुधन उत्पाद और दुग्ध उत्पादन से भी थोड़ी बहुत आय होती थी और थोड़े बहुत इलाकों में चारा उत्पादन होता था और थोड़ी बहुत जमीन चरागाह के लिए छोड़ी गई थी।

11.3.1 संस्थागत कारक : कृषि दास व्यवस्था

पन्द्रहवीं शताब्दी तक आते आते पश्चिमी यूरोप में कृषि दास व्यवस्था लगभग समाप्त हो गई थी। परंतु इसके विपरीत रूस में लगभग 1550-1650 के बीच स्वतंत्र ग्रामीण जनता को कृषि दास बनाया गया। वे या तो मजदूरी (बर्शिना) करते थे या नगद या वस्तु (ओब्रोक) के रूप में दास की भूमिका की अदायगी करते थे। 1550 के दशक में अस्त्राखान और कजान के खानेतों पर रूसी आधिपत्य के बाद खेती करने के लिए उपजाऊ दक्षिणी काली जमीन के क्षेत्र रूसी उपनिवेशीकरण के लिए उपलब्ध हो गए। इस उपजाऊ भूमि पर बड़ी संख्या में किसानों के बसने और भूमिपतियों से आजाद होने के कारण रूस का मध्यवर्ती और उत्तर पश्चिम क्षेत्र के बड़े हिस्से वीरान हो गए। इससे राजस्व उगाही में कठिनाई होने लगी और भूमिपतियों को मजदूर नहीं मिलने लगे। किसानों को कृषि दास बनाकर और उन्हें भूमि से और किसी खास भूमिपति (पोमेशिक) से बांधकर इन दोनों समस्याओं का समाधान कर दिया गया।

कृषि दास व्यवस्था से किसानों की आवाजाही पर प्रतिबंध लग गया और भी इसी प्रकार के कानून बनाकर शहर में रहने वाले लोगों और पुजारियों को अपने कार्यों और व्यवसायों से जोड़ दिया गया।

11.3.2 संस्थागत कारक : कम्यून

गांवों में कर अदायगी और सेना में भर्ती की सामूहिक जिम्मेदारी खेती-सामुदायिक-समूह (ऑबशिना) और इसके राजनैतिक समकक्ष मीर की थी। प्रत्येक परिवार के लोग एक इकाई के रूप में मिलकर खेती करते थे परंतु इस पर कम्यून का सामूहिक अधिकार होता था। मीर साम्राज्य की सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई थी। अपने सदस्यों की जमीनों पर संयुक्त रूप से अधिकार रखने के साथ-साथ कम्यून कृषि उत्पादन से जुड़े विभिन्न प्रकार की स्थानीय सेवाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार के लिए भी उत्तरदायी था। कम्यून के अन्तर्गत खेती योग्य जमीन को कई भागों में विभाजित किया जाता था जिसका आधार खेत की उर्वरता और गांव से इसकी दूरी होती थी। प्रत्येक परिवार को अच्छे और खराब सभी प्रकार के खेत दिए जाते थे, परिवार में वयस्क सदस्यों की संख्या के आधार पर खेतों का अवंटन किया जाता था और इन खेतों का समय-समय पर पुनर्वितरण किया जाता था। इस व्यवस्था के अन्तर्गत सभी परिवारों को अच्छे और बुरे खेत दिए जाते थे ताकि वे अपना जीवन-यापन कर सकें और कर की अदायगी भी कर सकें।

निजी मिल्कियत की अनुपस्थिति और समय-समय पर किए जाने वाले पुनर्वितरण के आधार पर किसान अपने खेतों में दीर्घावधि सुधार नहीं करते थे और अपने खेतों में सामर्थ्य रहने पर भी ज्यादा निवेश नहीं करते थे। उर्वरता प्राप्त करने के लिए एक तिहाई खेत को हमेशा खाली छोड़ दिया जाता था परंतु खेतों के बार-बार पुनर्वितरण से यह प्रथा भी हतोत्साहित हुई। उनके खेतों के आकार बहुत छोटे थे और खेतों में आने और जाने में भी काफी समय लगता था। इन सब कारणों से खेतों में उपज बहुत ज्यादा नहीं हो पाती थी। इसके कारण नए स्थापित क्षेत्रों में उपज कम होती थी और जनसंख्या बहुल पुरानी बस्तियों में श्रम उत्पादकता बहुत ही कम थी।

11.4 औद्योगीकरण पर मुक्ति का प्रभाव

औद्योगीकृत अर्थव्यवस्था के लिए कृषि दास व्यवस्था स्पष्ट रूप से एक बड़ी बाधा थी। इसमें घरेलू बाजार का फैलाव नहीं हो पाता था। कृषि में उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल नहीं हो पाता था और प्रति व्यक्ति आय भी बहुत कम होती थी। इसकी सामाजिक संरचना में शीर्ष पर कुछ थोड़े से कुलीन वर्ग के लोग रहते थे और शेष किसानों की एक बड़ी फौज होती थी। इस व्यवस्था में मध्य वर्ग की संख्या काफी कम थी और गत्यात्मकता, साक्षरता और आय भी कम थी जो एक औद्योगिक समाज के उदय के लिए अपरिहार्य होती थी। कृषि दास व्यवस्था के मूल्य और दृष्टिकोण औद्योगीकरण के प्रतिकूल होते हैं क्योंकि यहां औद्योगिक उत्पादन में निवेश करने की अपेक्षा भूमि व्यापार और कृषि दासों में निवेश को प्राथमिकता दी जाती थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक पूरे रूसी समाज में यह महसूस किया जाने लगा कि आधुनिक आर्थिक विकास के लिए कृषि दास व्यवस्था एक बड़ी बाधा थी। इसके विरोधियों ने यह कहना शुरू किया कि इस व्यवस्था के रहते कृषि का वाणिज्यिकरण नहीं हो सकता , इसमें आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता और इसके रहते उद्योग को मुक्त श्रमिक नहीं मिल सकते। 1861 में कृषि दास व्यवस्था के उन्मूलन (जिसे मुक्ति कहा गया) के पहले कारखानों में काम करने वाले मजदूरों में कृषि दासों से आए मजदूरों की संख्या मात्र 13% थी। धातुकर्म जैसे उद्योगों में जबरन लगाए मजदूरों की अपेक्षा कपड़ा उद्योगों में लगे मुक्त श्रमिकों की उत्पादकता बेहतर थी। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ज्यादा से ज्यादा कृषि दास शारीरिक श्रम (बार्शिना) के बदले नगद या वस्तु के रूप में अदायगी (ओब्रोक) को प्राथमिकता देने लगे। इससे गैर कृषि रोजगारों में वृद्धि हुई जिससे कठोर सामंती सामाजिक व्यवस्था में गत्यात्मकता आई।

1840 और 1850 के दशक में रूस के गांवों में किसानों ने कृषि दास व्यवस्था के खिलाफ जमकर विद्रोह किया। 1856 में क्रीमिया युद्ध में रूस की हार के बाद कृषि दास व्यवस्था का उन्मूलन अनिवार्य हो गया। पूरे रूस में कृषकों के असंतोष और विद्रोह के कारण आंतरिक सुरक्षा की समस्या पैदा हो गई थी और विदेशों के आकमण

की संभावना बनी हुई थी। 19 फरवरी 1861 की राजाज्ञा के द्वारा समाज के अन्य सदस्यों की भांति कृषि दासों को भी समान नागरिक अधिकार दिए गए, अब उन्हें शादी करने की स्वतंत्रता थी, वे कानून का सहारा ले सकते थे और स्वतंत्र रूप से औद्योगिक और वाणिज्यिक उद्योग स्थापित कर सकते थे और उसे चला सकते थे। जो खेत वे जोतते थे उसपर उनका अधिकार स्थापित होना था परंतु इसके लिए उनको भुगतान करना था। इन भुगतानों के लिए कम्यून को संयुक्त रूप से जिम्मेदारी दी गई। इसे छुटकारा देय के रूप में जाना गया। भद्रजनों को कृषि दास छिन जाने के बदले किसानों की कुछ भूमि दी गई।

चित्र 1 : 1861 में कृषि दासों की मुक्ति की घोषणा का दृश्य

इस कदम के सकारात्मक पहलू इस प्रकार हैं : अब किसान उद्योग और व्यापार में हिस्सा लेने लगे और मुनाफा कमाने के लिए आजाद थे; अब मुद्रा अर्थव्यवस्था की संभावना भी बढ़ी क्योंकि कृषक अब अपना छुटकारा देय नगद में भुगतान करने लगे। परंतु कई इतिहासकारों का मानना है कि 1861 में कृषि दास व्यवस्था का उन्मूलन छल मात्र था क्योंकि नए मुक्त कृषि दास पर लंबे समय तक के लिए कर्ज लाद दिया गया था और उन्हें भूमि का आवंटन अपर्याप्त और असंतुलित हुआ था। इसके अलावा देय के भुगतानों का संयुक्त उत्तरदायित्व कम्यून को सौंपा गया था जो किसानों द्वारा देय का भुगतान किए बिना उन्हें बाहर नहीं जाने देती थी। इसलिए किसानों की आवाजाही की समस्या अभी भी बनी रही।

छुटकारा अदायगी किसानों पर कर का एक भारी बोझ था। वस्तुत: यह कृषि से प्राप्त होने वाला एक नजराना था। 1861 के बाद इस आय में से बहुत कम ही कृषि में पुनर्निवेशित किया गया क्योंकि अधिकांश भूमिपति खेत की पैदावार और उत्पादन बढ़ाने के बदले खेत की खरीद बिक्री करने में ज्यादा रुचि रखते थे।

किसानों को इन भुगतानों के अलावा अल्कोहल, चीनी, माचिस, तम्बाकु और किरासन (मिट्टी तेल) जैसी अनिवार्य वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष कर भी देना पड़ता था। इससे किसानों पर करों का बोझ लगातार बढ़ता चला गया। परंतु इन अप्रत्यक्ष करों का उपयोग 1880 के दशक से रेलवे और अन्य उद्योगों को वित्त प्रदान करने के लिए किया गया। हालांकि पूरे देश में औसतन किसानों के हाथ से 4% भूमि ही निकली परंतु 16 ब्लैक-अर्थ

और स्टेपे प्रांतों में एक चौथाई जमीन उनके हाथ से निकल गई और यूक्रेन में 31% जमीन उनकी नहीं रही जो सर्वाधिक मूल्यवान और उपजाऊ थी। रूसी अर्थशास्त्री यानसोन ने आकलन करके बताया था कि किसानों को अपना जीवन यापन करने के लिए काली मिट्टी के 13.5 एकड़ और गैर-काली मिट्टी के 20 एकड़ खेतों की जरूरत थी जबकि 75% आजाद हुए कृषि दासों के पास औसतन मात्र 10 एकड़ या उससे कम भूमि थी।

हालांकि पश्चिमी या मध्य यूरोपीय मानदंडों के आधार पर खेत के यह आकार कम नहीं थे परंतु दो कारकों के कारण कृषि के विकास में दिक्कते आईं। पहला यह कि 1862-1914 के बीच ग्रामीण जनसंख्या में 50% की वृद्धि हुई जबकि किसानों के खेतों में मात्र 23% की वृद्धि हुई। इस प्रकार 1881 में उपलब्ध खेतों में 25% की कमी आई जो 1905 तक घट कर 50% हो गई।

भूमि की बढ़ती हुई कीमतों और किरायों तथा अनाज के गिरते मूल्यों के संदर्भ में बढ़ी हुई खरीद और किरायों के बावजूद भूमि के मूल्य में कमी आई। गांवों में जमीन के औसत मूल्य प्रति देसियातीना (2.7 एकड़) की कीमत 1854 और 1905 के बीच 615% बढ़ी अर्थात इनमें प्रतिवर्ष 12-13% की वृद्धि हुई। भूमि की कीमतों में हुई इस अचानक वृद्धि के साथ कृषीय उत्पादकता में वृद्धि नहीं हुई। रूस में ग्रामीण जनसंख्या जरूरत से ज्यादा थी। रूस के गांवों में 33% से 40% लोग रहते थे। वहां के गांवों में खेती के लिए पिछड़ी तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता था। इन सब कारणों से उत्पादकता की गति धीमी रही। 1876 से 1896 तक विश्व बाजारों में अनाज के दामों में 'लंबी मंदी' के कारण रूस में भी अनाजों के दाम धीरे-धीरे गिर कर आधे हो गए। इससे अनाज निर्यात से होने वाली राज्य की आमदनी में कमी आई तथा मजदूरों और किसानों दोनों की आय कम हुई। कम्यून के पास उपलब्ध खेतों की तुलना में यहां रहने वाली जनसंख्या तेजी से बढ़ी।

इक्के दुक्के व्यक्तिगत प्रयासों को छोड़कर कृषि में सुधार का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। गांव आबादी के बोझ से दबते चले गए। श्रमिक हाथ पर हाथ पर धरे बैठे रहते थे और खेत छोटे होते जा रहे थे।

कर अदायगी की सामूहिक जिम्मेदारी के कारण कम्यून किसानों के शहर या उद्योग में स्थानांतरण को नियंत्रित करते थे। यदि कोई किसान जाना चाहता था तो उसे 'पासपोर्ट' नामक आदेश पत्र खरीदना होता था, सभी पुराने कर चुकाने होते थे, साथ ही साथ भविष्य में सामुदायिक कर भी देना होता था। हालांकि किसानों को कम्यून द्वारा थोड़े समय के लिए बाहर जाकर काम करने के लिए जारी किए गए पासपोर्टों की संख्या का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि बेहतर गैर कृषीय अवसर उपलब्ध होने पर यह किसानों की गत्यात्मकता को प्रतिबंधित नहीं करती थी। कुछ इतिहासकारों का यह मानना है कि प्रति व्यक्ति व्यक्तिगत शुल्क की समाप्ति (1882-1885) और 1905 में छुटकारा अदायगी की समाप्ति के बाद किसान सही तौर पर आजाद हुए।

किसानों की मुक्ति से घरेलू बाजार का विस्तार हुआ या नहीं इस पर विद्वान एकमत नही हैं। यह तो आप जानते हैं कि औद्योगिक पूंजीवाद के लिए घरेलू बाजार का निर्माण यदि पर्याप्त नहीं तो अनिवार्य शर्त तो है ही। छुटकारा अदायगी के नगद भुगतान के कारण ग्रामीण बाजारों के निष्क्रिय स्वरूप में बदलाव आया। रेलवे, स्थानीय बाजार और शहरी जरूरतों ने किसानों को अनाज बाजार में बेचने की सुविधा उपलब्ध कराई और कभी-कभी उन्हें इसके लिए मजबूर भी किया।

बीसवीं शताब्दी में धीरे-धीरे किसानों की गरीबी थोड़ी कम हुई वे औद्योगिक वस्तुओं के छोटे परंतु अनियमित खरीददार बन गए; अनियमित खरीददार इसलिए कि हर तीसरे चौथे वर्ष फसल खराब हो जाने या अकाल पड़ जाने के कारण उनकी कय शक्ति बाधित हो जाती थी।

11.5 रूसी औद्योगीकरण में राज्य की भूमिका

रूस के आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन के कारण राज्य के हस्तक्षेप को उचित ठहराया गया। जार पीटर द ग्रेट (1689-1725) ने प्रथम रूसी औद्योगीकरण की शुरुआत करने की कोशिश की परंतु वे बहुत कामयाब नहीं हुए। थल सेना और नौ सेना के लिए अस्त्र और जरूरी वस्तुएं बनाने वाले कारखानों में कृषिदासों को

मजदूर रखा गया और यूरोप से प्राप्त की गई या चुराई गई बेहतरीन प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल तीव्रता से किया गया। यह काम अक्सर पीटर द ग्रेट स्वयं किया करते थे। 1890 के दशक तक भूमिधर अभिजात वर्ग औद्योगीकरण के बिलकुल खिलाफ थे। राज्य ने निवेश, उपभोग और उत्पादन का जिम्मा उठाया जो काम पश्चिम में पूंजीपति कर रहे थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से औद्योगिक पूंजीवाद को बढ़ावा देने के लिए राज्य ने चार मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया; ये थे : बजट (राजस्व और खर्च के बीच संतुलन); मुद्रा (विदेशों में इसके मूल्य में स्थिरता); व्यापार संतुलन (आयात बनाम निर्यात मूल्य) और भुगतान संतुलन (ऋण अदायगी)।

औद्योगीकरण के लिए आवश्यक अधिसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए बजट संबंधी स्थायित्व जरूरी था। विदेशी पूंजी के आगमन के लिए एक ठोस मुद्रा व्यवस्था की आवश्यकता थी। आयातित प्रौद्योगिकी का भुगतान अनाज के निर्यात से करने के लिए व्यापार संतुलन अपने पक्ष में होना चाहिए था। अन्तिम बात यह कि रूस की अन्तरराष्ट्रीय साख ऋण के ब्याज की समय से अदायगी से जुड़ी हुई थी क्योंकि राज्य ने अधिकांश ऋण बाहर से ही लिया था।

रूस के पास एक तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या और समृद्ध प्राकृतिक संसाधन थे परंतु यहां के किसानों के गरीब होने के कारण आंतरिक मांग बहुत सीमित थी। व्यक्तिगत मांग के कमजोर होने के कारण राज्य को ही प्रमुख खरीददार की भूमिका निभानी पड़ती थी। राज्य ने इसके लिए कई कदम उठाए,मसलन, भारी उद्योगों से राज्य ने एकमुश्त खरीददारी की, उन्हें मुनाफा और ऋण की गारंटी दी।

रूस में उद्योग की शुरुआत देर से हुई इसलिए यह पश्चिमी उद्योग से प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकती थी। अत: राज्य ने आयात और निर्यात पर कर लगाकर उन्हें संरक्षण देने का कार्य किया। परंतु इसके लिए उन्हें एक ओर कृषि और उद्योग में और उनके बीच आपसी संतुलन बनाए रखना पड़ा और दूसरी ओर अपनी राजस्व जरूरतों पर भी नजर रखनी पड़ी।

1850 और 1870 के बीच रूस में कर दर अपेक्षाकृत कम थी। कम कर की इस अवधि में आयात तेजी से बढ़ा। कृषि निर्यात में तेजी होने पर भी 1860-1870 के दशक में रूसी व्यापार घाटे का सामना कर रहा था क्योंकि आयातित वस्तुओं का मूल्य निर्यातित वस्तुओं से कम था। कर की दर कम रखकर रूसी राज्यों ने भारी उद्योग की अपेक्षा कपड़ा उद्योग जैसे हल्के उद्योगों को आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया जिसकी मांग मुख्यत: उद्योग क्षेत्र से ही आती थी। 1877 से और 1881, 1884, 1885, 1887 में उभरते धातु निर्माण उद्योग और खनन उद्योगों को संरक्षण देने के लिए आयात शुल्क बढ़ाया गया।

11.6 गेरशेनकोन प्रारूप

रूसी औद्योगीकरण के बारे में एलेक्जेंडर गेरशेनकोन के विचार काफी प्रभावी रहे हैं जिन्होंने खासतौर पर रूसी औद्योगीकरण की प्रक्रिया और आमतौर पर 'आर्थिक पिछड़ेपन' की परिस्थिति में औद्योगीकरण के लिए एक प्रारूप प्रस्तुत किया था। इस प्रारूप में इस धारणा को अस्वीकार कर दिया था कि प्रथम या 'अग्रणी' औद्योगिक देश के अनुरूप ही विकास की प्रक्रिया चलती है और अनुगमन करने वाले राष्ट्र या बाद में औद्योगीकृत होने वाले राष्ट्रों में औद्योगीकरण की प्रक्रिया अनिवार्यत: समान होती है। उन्होंने औद्योगिक क्रांति की पूर्व शर्तों की अवधारणा का भी खंडन किया। इसकी बजाए उन्होंने पिछड़ेपन के स्तर के अनुरूप विभिन्न राष्ट्रों में इन प्रक्रियाओं के बीच सैद्धांतिक और संस्थागत अन्तर पर बल दिया। उनके विचार से इसी अन्तर से उत्पादन में उछाल, औद्योगिक वृद्धि की गति और परिणामस्वरूप औद्योगिक संरचनाएं निर्धारित होती हैं।

औद्योगीकरण के शुरुआती दौर में किसी देश विशेष के आपेक्षिक पिछड़ेपन के अनुसार औद्योगीकरण की प्रकृति और प्रगति का स्वरूप इस प्रारूप के अनुसार निम्नलिखित तरीके से बदल जाता है :

क) औद्योगीकरण की शुरुआत में जितनी तेजी से उछाल आएगा उसमें उतनी ही मजबूती आएगी और उत्पादन

की दर अपेक्षाकृत ऊंची रहेगी। रूस में 1890 के दशक में निम्न आधार से औद्योगीकरण की शुरुआत हुई थी और उस दशक में पूरे विश्व में यहां की औद्योगिक वृद्धि दर सबसे ज्यादा रही थी।

ख) बड़े संयंत्रों और उद्यमों पर जितना ज्यादा जोर होगा औद्योगिक प्रगति उतनी ही ज्यादा होगी। वस्तुत: 1900 तक आते-आते रूस विश्व की एक सर्वाधिक 'संकेंद्रित' अर्थव्यवस्था हो गई थी क्योंकि अन्य देशों की अपेक्षा यहां उत्पादन में बड़े उद्यमों का अंशदान ज्यादा था।

ग) जहां उपभोक्ता वस्तुओं के बदले उत्पादक वस्तुओं के उत्पादन पर बल देने से भी औद्योगीकरण पर फर्क पड़ता है। हालांकि रूस में औद्योगीकरण होने से पहले कपड़ा उद्योग; प्रमुख उपभोक्ता उद्योगद्ध सबसे बड़ा उद्योग था परंतु राज्य ने 1880 के दशक से लेकर 1913 तक प्रमुख रूप से खनन और धातु निर्माण उद्योगों में पूंजी निवेशित की।

घ) जनसंख्या के उपभोग स्तर पर दबाव ज्यादा होने का भी असर होता है। 1890 के दशक से राज्य निर्देशित औद्योगीकरण उच्च अप्रत्यक्ष करों, अनाज के निर्यात और स्वास्थ्य, आवास और विद्यालयों जैसे 'सामाजिक' निवेश की अपेक्षाकृत अवहेलना के साथ आगे बढ़ा। करों और सामाजिक सुविधाओं के अभाव ने सबसे ज्यादा मजदूरों और किसानों को प्रभावित किया और लगभग 1900 के बाद ही औद्योगिक वस्तुओं के उपभोग की उनकी क्षमता बढ़ सकी।

ड.) नए उद्योगों को पूंजी उपलब्ध कराने के लिए विशेष संस्थाओं के निर्माण की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इसके अतिरिक्त अपेक्षाकृत कम संकेंद्रित, बेहतर सूचनायुक्त निर्देशन से भी फर्क पड़ता है। ग्रेरशेनक्रोन का मानना था कि देश जितना पिछड़ा होगा वहां उन कारकों का नियंत्रण और व्यापकता उतनी ही ज्यादा होगी।

रूसी औद्योगीकरण को एक विकसित राज्य का साथ मिला जिसमें एक शक्तिशाली वित्त मंत्रालय था जिसने उस समय किसी भी औद्योगिक देश की अपेक्षा यहां की अर्थव्यवस्था को अपने नियंत्रण में लिया। यह नियंत्रण इतना मजबूत था कि लोगों के काम करने की पद्धति और जीवन शैली पर भी इसका प्रभाव पड़ा और किसानों तथा मजदूरों की मांग भी इससे प्रभावित हुई।

च) कृषि औद्योगीकरण में सक्रिय भूमिका निभाने में कम सक्षम थी क्योंकि यह नए उद्योगों को श्रम की बढ़ती उत्पादकता पर आधारित विकासशील घरेलू बाजार प्रदान नहीं कर पा रही थी।

इस संदर्भ में हाल में जो अनुसंधान हुए हैं उससे इस प्रारूप पर पुनर्विचार करने की जरूरत महसूस की जाने लगी है। पूर्व अवधारणा की अपेक्षा प्रति व्यक्ति कृषि उत्पादन में वृद्धि अधिक बेहतर थी। इसके अलावा 1880 और 1890 के दशकों में कृषि श्रम की उत्पादकता भी औद्योगिक दर से लगभग 75% बढ़ी। 1905 के बाद स्टॉलपिन सुधारों (जिसने निजी खेती को प्रोत्साहित किया) और लोगों के साइबेरिया जाकर बसने से लोगों की आय भी बढ़ी और बाजार भी विकसित हुआ, खेती उपभोग भी बढ़ा और उत्पादन पद्धतियों में भी विविधता आई। अत: 1900 के बाद उद्योग के साथ-साथ कृषि का भी बेहतर ढंग से विकास हुआ।

विभिन्न देशों और युगों में औद्योगीकरण के आधारभूत तत्वों के अभाव का 'विकल्प' प्रस्तुत करना गेरशेनक्रोन प्रारूप की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। रूस में औद्योगीकरण के क्षेत्र में राज्य ने हस्तक्षेप किया और अभावों की पूर्ति का प्रयास किया। इंगलैंड की औद्योगिक क्रांति में निजी उद्यमियों और जर्मनी में निवेश बैंकों ने जो भूमिका अदा की वही भूमिका रूस में राज्य ने निभाई। गेरशेनक्रोन का मानना था कि रूस और यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों के बीच बढ़ते तनाव के कारण राज्य का हस्तक्षेप अनिवार्य हो गया था।

रूस में राज्य ने इसे विभिन्न तरीकों से सम्पन्न किया। व्यक्तिगत उद्यमियों के छोटे आदेशों की क्षतिपूर्ति के लिए राज्य सरकार लोहा और इस्पात जैसी औद्योगिक वस्तुओं का सबसे बड़ा खरीददार बन गया। 1913 में भी राज्य के बैंकों की संख्या और संसाधन निजी बैंकों की अपेक्षा मजबूत थे। बैंक ऋण की कमी के कारण राज्य चुने हुए उद्यमियों को ऋण उपलब्ध कराता था। इसके अलावा विदेशी पूंजी और कौशल का आयात करके राज्य ने कमजोर और पिछड़े हुए उद्यमी वर्ग को सहायता प्रदान की।

पहले यह माना जाता था कि इतने बड़े और विशाल कार्य का भार निजी उद्यम नहीं संभाल सकता है और राज्य को निजी पूंजीपतियों के समर्थन में आगे आना ही पड़ता है। बाद के खोजों से यह पता चलता है कि सरकार राज्य नियंत्रण के बाहर बढ़ते निजी व्यापार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।

गेरशेनक्रोन प्रारूप के अनुसार जब औद्योगिक उछाल अपने पूरे उत्कर्ष पर होता है तो राज्य की सक्रिय भूमिका समाप्त हो जाती है और गैर-राज्य उद्यमों और पूंजी का प्रसार होता है। जैसा कि भाग 11.8 में बताया जाएगा 1900 के बाद हुई औद्योगिक वृद्धि पहले की अपेक्षा राज्य की मांगों और रेलवे के विस्तार पर कम आश्रित थी। निवेश में बैंकों का अंशदान और भूमिका बढ़ी, कुल तैयार माल के उत्पादन में हल्के उद्योगों का अंशदान बढ़ा, कई आधारभूत वस्तुओं की प्रति व्यक्ति उपभोग की दर बढ़ी और 1900 तथा 1910 के बीच रूसी उद्योग और बैंकिंग में विदेशी पूंजी के आगमन की दर धीमी हुई।

11.7 कृषि दासों की मुक्ति के पहले औद्योगीकरण

1861 से पहले रूस में आधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल केवल सूत कातने, आसवन, मुद्रण और चीनी परिशोधन में ही हो रहा था। यहां तक कि 1860 तक सूती कपड़ा उद्योग मुख्य रूप से गांवों में ही केंद्रित था हालांकि इसका आकार बहुत बड़ा था। उस समय रूस में सूत कातने की तकलियों की संख्या 20 लाख थी। इससे ज्यादा तकलियां केवल ब्रिटेन, फ्रांस, आस्ट्रिया, संयुक्त राज्य अमेरिका में ही थीं। हालांकि निर्मित वस्तुओं की गुणवत्ता निम्नस्तरीय थी और इसकी बिक्री पूरी तरह संरक्षित घरेलू बाजार में ही होती थी। कपड़ा उद्योग के अन्तर्गत ऊन, कताई, मलमल और रेशम उद्योग मुख्यत: कारीगर आधारित उद्योग ही थे। 1861 में धातु निर्माण क्षेत्र में वाष्प इंजन और टरबाइन कुल ऊर्जा के 12% की ही आपूर्ति करते थे जबकि बाकी ऊर्जा जल संसाधनों से प्राप्त होती थी।

1890 के दशक के बाद रूसी उद्योग में अभूतपूर्व विकास हुआ। भाग 11.1 और 11.2 में यह बताया जा चुका है कि कृषिदासों की उन्मुक्तता का उद्देश्य कृषीय अधिशेष उत्पादनों और कृषि मजदूरों पर राज्य का ज्यादा से ज्यादा नियंत्रण स्थापित करना था न कि औद्योगिक पूंजीवाद का विकास करना। यदि औद्योगिक वृद्धि के लिए ही दासों को स्वतंत्र किया गया होता तो भी देश के निम्न आर्थिक स्तर और पिछड़ेपन के कारण औद्योगिक विकास के लिए आरंभिक युग की आवश्यकता पड़ती। 1860 और 1870 के दशक के बीच न्यायपालिका, स्थानीय सरकार, विद्यालयों और सेना में सुधार कर औद्योगिक पूंजीवाद की नींव रखी गई।

कृषि दासों की मुक्ति के बाद कुछ समय के लिए संकट की स्थिति बनी रही। उसके बाद भी औद्योगिक विकास सामान्य रहा। 1861 में हालांकि केवल 13% ही औद्योगिक मजदूर कृषिदास थे परंतु कृषिदास व्यवस्था के उन्मूलन से सभी औद्योगिक शाखाएं खासतौर पर सूती कपड़ा उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ। सूती कपड़ा उद्योग को कच्चा माल संयुक्त राज्य अमेरिका से प्राप्त होता था। अमेरिकी गृह युद्ध होने से सूती उद्योग की गति धीमी हुई और इस मंदी ने पूरी अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। धातु निर्माण उद्योग पहले मुख्य रूप से कृषिदासों पर ही निर्भर था ; 1880 के दशक तक इसका विकास बहुत धीमा रहा। 1861 से लेकर 1887 तक कोयले का उत्पादन भी धीरे-धीरे ही बढ़ा।

11.8 रेलवे

यह माना जाता है कि उन्नीसवीं शताब्दी में कृषिदास प्रथा के उन्मूलन की अपेक्षा रेलवे का निर्माण एक अधिक क्रांतिकारी घटना थी। 1860 के दशक में रेलवे के कारण अनाज के घरेलू और विदेशी बाजार को प्रोत्साहन मिला। इसके अलावा अधिकांश लोग यह भी स्वीकार करते हैं कि पूर्व क्रांति युग में रूसी अर्थव्यवस्था में रेलवे निर्माण के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन हुए। 1860 में रूस में 1 हजार मील लंबी रेलवे लाइन थी जो 1916 में 40 हजार मील हो गई जिसके कारण भारी उद्योगों के विकास और कृषि के वाणिज्यिकरण में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

रूस में पहली रेल लाइन सुधार-पूर्व युग में बिछाई गई थी। पहली लाइन 1838 में जार्को में स्थापित की गई थी जिसके बाद वारसा-वियेना लाइन (1851), सेंट पीटर्सबर्ग-मास्को लाइन (निकोलेवसकया लाइन, 1851) और सेंट पीटर्सबर्ग-वरसा लाइन 1859 में बिछाई गई। कृषिदास प्रथा के उन्मूलन में कृषीय विपणन का बढ़ता महत्व एक महत्वपूर्ण कारक था, तदनुसार सेंट्रल ब्लैक अर्थ जोन के अनाज उत्पादन करने वाले इलाकों में स्थित दो राजधानियों को जोड़ने के लिए 1860 के दशक में रेलवे नीति बनाई गई। यह काम 1868 तक पूरा कर लिया

गया। 1870 के दशक के मध्य तक अनाज के निर्यात को बढ़ाने के लिए काले सागर के बन्दरगाहों तक लाइन बिछाई गई। 1868 और 1878 के बीच रेल लाइन में 329 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई।

1861 और 1880 के बीच 80% से भी अधिक रूसी रेलवे का निर्माण और संचालन निजी कम्पनियां करती थीं जिन्हें रियायत और मुनाफे की गारंटी दी जाती थी जिससे वे हमेशा लाभ की स्थिति में रहते थे। हालांकि 1880 के बाद सरकार ने सक्रियता से इस क्षेत्र में कदम रखा और अधिकांश नई रेल लाइनों का निर्माण और संचालन किया। निजी कम्पनियों को खरीद लिया और शेष पर कड़ा प्रतिबंध रखा। 1914 तक आते-आते 70% रेलवे पर राज्य का अधिकार हो गया और वह उसका संचालन करने लगी।

11.9 औद्योगिक प्रवृत्तियां : 1860 से 1880 तक

1860 के दशक के उत्तरार्द्ध और 1870 के पूर्वार्द्ध में औद्योगिक उत्पादन और बाजार में तेजी से वृद्धि हुई, ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियां स्थापित की गईं और रेलवे का जाल बिछाया गया। 1873 से पूरे यूरोप के संकट से रूस भी प्रभावित हुआ और रूसी अर्थव्यवस्था में माल का उत्पादन खपत से ज्यादा होने लगा, चीजों की कीमतें गिर गईं, कई उद्योग और बैंक बन्द हो गए। हालांकि मुख्य रूप से इस संकट ने लोहा, इस्पात और ईंधन को प्रभावित किया परंतु इसके कारण रेलवे निर्माण में भी कमी आई और उपभोक्ता उद्योगों को भी इसने जल्द ही प्रभावित किया। 1870 के दशक के पूर्वार्द्ध में खराब फसल होने और अकाल पड़ने के कारण किसानों की क्रय शक्ति कमजोर हुई और इसके कारण बाजार संकुचित हुआ। 1877 में रूसी-तुर्की युद्ध के कारण सेना की मांग बढ़ी और इससे उद्योग को बल मिला। इसके साथ-साथ 1878 और 1879 में अच्छी फसल होने से अनाज का रिकॉर्ड निर्यात हुआ।

परंतु यह स्थिति बहुत दिनों तक कायम नहीं रही। 1882 से लेकर 1885 तक औद्योगिक विकास में गिरावट आई। 1890 में भी अधिकांश क्षेत्रों में मंदी आई और 1891 में फसल नष्ट होने और परिणामस्वरूप अकाल पड़ने के कारण इसका प्रभाव तीखा हो गया। फसल न होने के साथ-साथ नए रेलवे में निवेश में कमी आई। इस संकट के दौरान 1860 के बाद पश्चिमी यूरोप, जो स्वयं संकटग्रस्त था, से ऋण मिलना भी कम हो गया। इससे संकट की विकट स्थिति उत्पन्न हो गई, इस दौरान नई पूंजी और रेलवे लाइनों का निर्माण धीमी गति से हुआ, कारखाने बंद हुए और बड़े पैमाने पर बेरोजगारी फैली।

1862 और 1882 के बीच औद्योगिक उत्पादन दोगुना हो गया। इस दौरान 3.5% की औसत दर से प्रतिवर्ष वृद्धि हुई। 1860 और 1890 के बीच कोल का उत्पादन 2005% उछल गया, लोहा, इस्पात और पेट्रोलियम का उत्पादन चारगुना हो गया तथा रेलवे में 2000% की वृद्धि हुई। 1860 और 1890 के बीच श्रम बल दोगुना हो गया।

11.10 1890 के दशक के औद्योगिक उछाल की पृष्ठभूमि

1880 के दशक के उत्तरार्द्ध और 1890 के दशक के पूर्वार्द्ध में रूस की आर्थिक व्यवस्था प्रगति के लिए तैयार थी। धातु निर्माण, कोयला खनन और तेल उत्पादन में हुए विकास, कपास उत्पादन का मशीनीकरण और रेलवे निर्माण का पुन: आरंभ एक तरह से 1890 के दशक में होने वाले औद्योगिक विकास की एक पूर्व पीठिका ही थी।

यह उछाल मुख्य रूप से दो बातों पर आधारित था: औद्योगीकरण के प्रति सरकारी नीति और यूरोप में शांति। 1860 के दशक में रूसी सरकार सर्वहारा वर्ग जैसे नए सामाजिक वर्गों के उदय से औद्योगिक विकास के संबंध में सशंकित हो गई और उसे उस बात की आशंका हो गई कि मजदूरों में असंतोष फैलने से कृषीय समाज के ताने-बाने में खतरनाक तनाव आ जाएगा जिससे कुलीनवर्ग के हितों की रक्षा नहीं हा पाएगी।

1861 में कुलीनवर्ग से कृषिदास छीनने के एवज में जो भुगतान करना पड़ा था उसका आर्थिक प्रभाव 1860 के पूरे दशक में बना रहा। 1850 के दशक से लेकर 1870 के दशक तक क्रिमिया युद्ध और रूसी-तुर्की युद्ध के कारण राज्य सरकार का अधिकांश धन उत्पादन में निवेश के बजाए सेना की ओर चला गया जिससे विदेशों में रूसी रूबल की कीमत कम हुई और रूस में मुद्रा स्फिति आ गई।

1890 के दशक में जो औद्योगिक उछाल आया उसके लिए अन्तरराष्ट्रीय शांति जरूरी थी ताकि पूंजीगत वस्तुओं और तकनीकी विशेषज्ञताओं का आदान-प्रदाम हो सके। 1878 के बाद यूरोप में आई शांति का निकोलाई किसटियानोविच बंज (1881-1887) और इवाम अल्केसीविच विशेनग्रेडस्की (1887-1892) जैसे रूस के वित्त मंत्रियों ने सफलतापूर्वक उपयोग किया और रूस में बजट विस्तार, मौद्रिक स्थिरता और विदेशी निवेश की नींव रखी।

1890 के दशक से औद्योगीकरण रूसी राज्य का मुख्य उद्ददेश्य हो गया। 1893 के बाद वित्त मंत्री बने सरगे इलुविच विट ने इस महत्वाकांक्षा को अंजाम दिया। विट के उद्देश्य काफी हद तक राजनैतिक थे। चूंकि 1890 के दशक में दुनिया की बड़ी शक्तियों की तुलना में रूस पिछड़ा हुआ देश था इसलिए विट को प्रतिकूल परिस्थितियों में औद्योगीकरण के लिए सन्नद्ध होना था, तेजी से आर्थिक ताकत प्राप्त करनी थी क्योंकि औद्योगिक उत्पादकता के आधार पर ही राजनैतिक शक्ति तय होती थी।

बोध प्रश्न 1

1) रूस के पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी पर्यावरणीय कारकों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) रूसी औद्योगीकरण पर 'मुक्ति' का क्या प्रभाव पड़ा ?

....

....

....

....

....

....

3) गेरशेनक्रोन प्रारूप में 'विकल्प' से आप क्या समझते हैं ?

....

....

....

....

....

....

4) 1890 के दशक में औद्योगिक उछाल की पृष्ठभूमि क्या थी ?

....

....

....

....

....

....

11.11 विट व्यवस्था

विट के अनुसार औद्योगिक मजबूती की जड़ें रेलवे और भारी उद्योगों में निहित थी। विट व्यवस्था में शुल्क संरक्षण, मौद्रिक स्थिरता, वित्तीय सुधार, भारी कराधान और विदेशी निवेश के प्रोत्साहन पर बल दिया गया। उनका उद्देश्य निजी उद्यमों को प्रोत्साहित करना और राज्य पूंजीवाद के व्यापक कार्यक्रम के जरिए रूस के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना था। धातु निर्माण और इंधन उद्योगों के विकास से हल्के उद्योगों को बल मिलेगा। बढ़ती शहरी और औद्योगिक मांगों के कारण तीव्र गति से विकास करना होगा, इंगलैंड के बजाए जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका से सर्वाधिक उन्नत प्रौद्योगिकी का आयात करना होगा और विशाल कारखानों की स्थापना करनी होगी जिसमें ढेर सारे मजदूर एक साथ काम कर सकें। घरेलू पूंजी उद्यमशीलता और कुशल श्रमिकों की कमी के साथ-साथ रूस और उसके राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों के बीच बढ़ती खाई के कारण इस प्रकार की नीति सामने आई।

यहां यह बात समझ लेनी चाहिए कि हालांकि राज्य के व्यापक हस्तक्षेप संबंधी विट व्यवस्था एक निर्भीक और समयानुकूल प्रयास था परंतु यह पूर्णत: नवीन विचार नहीं था। 1860 से ही पूर्व वित्त मंत्रियों, जैसे मिखाइल किसटियानोविच, रेटर्न (1862-78), एन.के बंज और आई.ए.विशेनग्रेडस्की ने इस प्रकार की बातें सामने रखी थीं। उन्होंने बजट संतुलन ठीक करने, रूबल को स्थायित्व प्रदान करने और विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के कार्य पहले भी किए थे।

11.11.1 तीव्र वृद्धि

1890 के दशक में हुए औद्योगिक विकास में रेलवे निर्माण सर्वप्रमुख रहा। इस दौरान रेलवे लाइनों की लंबाई लगभग दोगुनी हो गई और इस प्रकार 37 : रेलवे लाइन बिछीं या पिछले पचास सालों में जितनी लाइनें बनी थीं उनके 50 प्रतिशत के बराबर लाइनों का निर्माण 1890 के दशक में हुआ। 1890 और 1900 के बीच रेलवे के इंजन, सवारी और माल के डब्बों की संख्या भी दोगुनी हो गई। 1890-1905 के बीच रेलवे की पूंजी में लगातार वृद्धि होने से औद्योगिक पूंजी में भी वृद्धि हुई और रेल तथा रेल के इंजन, डिब्बों आदि में निवेश करने से यूक्रेन स्थित नए लोहा इस्पात उद्योग तथ सेंट पीटर्सबर्ग में स्थापित इंजीनियरिंग उद्योग को विशेष रूप से समर्थन मिला। 1890 के दशक में रूस में लोहे के उत्पादन का एक तिहाई हिस्सा रेलवे में खप जाता था और इससे कोयले को भी बड़ा बाजार मिला। 1890 में रेलवे नेटवर्क की लंबाई की दृष्टि से रूस विश्व का पांचवा देश था और 1900 में केवल संयुक्त राज्य अमेरिका उससे आगे रह गया। यह सही है कि रूस के भौगोलिक विस्तार को देखते हुए यह विस्तार बहुत कम और अपर्याप्त था जिसे प्रथम विश्व युद्ध के दौरान महसूस किया गया। इसके बावजूद निस्संदेह रूप से रेलवे एक प्रमुख उद्योग था।

लगभग 1895 से रेलवे में निजी और राज्य पूंजी का निवेश लगभग बराबर था परंतु सरकार की वित्तीय हिस्सेदारी काफी अधिक थी क्योंकि राज्य द्वारा रेलवे निर्माण के लिए ऋण दिए जाने के अलावा सरकार सभी ऋणों पर मुनाफे की गारंटी देती थी और निजी कम्पनियों से महत्वपूर्ण या ऋण के बोझ से दबे रेलवे को खरीदने के लिए हमेशा तैयार रहती थी। 1900 तक रूसी रेलवे की कुल पूंजी 4.7 बिलियन रूबल हो गई। इसमें लगभग 3.6 बिलियन सरकारी पूंजी थी जो कुल सरकारी ऋण के आधे के बराबर थी। 1890 के दशक में रूसी रेलवे में विदेशी निवेश 341 मीलियन रूबल था जो अन्य उद्योगों या बैंकों की तुलना में काफी कम था। 1890 के दशक तक कपड़ा उद्योग सभी उद्योगों से काफी आगे रहा और उन्नीसवीं शताब्दी में यही स्थिति बनी रही। हालांकि विट ने खासतौर पर सूती वस्त्र उद्योग को समर्थन नहीं दिया था परंतु 1890 के दशक में इसमें प्रतिवर्ष 8% की दर से तीव्र वृद्धि हुई । 1899 तक यह उद्योग सबसे बड़ा नियोक्ता था और 7 औद्योगिक मजदूरों में से 1 मजदूर कपड़ा उद्योग में काम करता था। 1890 के दशक में सूती वस्त्र उद्योग का मशीनीकरण कर दिया गया।

इस उच्च स्तरीय प्रभावशाली विकास (यह विकास उस समय पूरे विश्व में तीव्रतम था) का आधार भारी उद्योग था। रूसी राज्य भी भारी उद्योग का ही विकास करना चाहता था। विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिवर्ष वृद्धि दर का प्रतिशत इस प्रकार था :

खनन, 11.2 रसायन, 10.7 इमारती लकड़ी, 9.3 धातु निर्माण, 8.4 चीनीमिट्टी (सेरामिक्स) 8.0 कपड़ा उद्योग, 7.8 और खाद्य परिशोधन 1.7। इस समय उत्पादकता में भी तीव्र वृद्धि हुई। एक ओर वस्त्र उद्योग में जहां उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ मजदूरों की संख्या में भी वृद्धि हुई वहीं खनन और धातु उत्पादन में 1887-97 के बीच उत्पादन 152% बढ़ा जबकि श्रम-बल में 39% की वृद्धि हुई। 1890 के दशक में हुए औद्योगिक उछाल का एक प्रमाण यह है कि 1900 में मौजूद सभी औद्योगिक उद्यमों में से 40% उद्यमों की स्थापना 1891 के बाद ही हुई।

1890 के दशक के औद्योगिक उछाल के कारण बड़े कारखानों का उदय हुआ जिसमें बड़ी तादाद में मजदूर काम करते थे और जिसमें ज्यादा उत्पादन होता था। इस दृष्टि से संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जर्मनी की अपेक्षा 1900 तक रूसी उद्योग सर्वाधिक 'संकेंद्रित' हो चुका था। 1890 में बड़े उद्यमों में (जहां 1000 से ज्यादा मजदूर काम करते हों) 40% रूसी औद्योगिक मजदूर काम करते थे जो 1902 में बढ़कर 50% हो गया। 1911 में बड़ी कम्पनियों (जिनकी पूंजी 50 लाख रूबल से अधिक थी) में से केवल 7.5% कम्पनियों ने औद्योगिक और वाणिज्यिक कम्पनियों में 38% से भी ज्यादा पूंजी निवेशित की थी। इसी प्रकार के 'संकेंद्रण' की प्रक्रिया के कारण 1900 के बाद उद्योगों को वित्त प्रदान करने का काम राज्य के स्थान पर बैंक करने लगा। 1900 में केवल 43 बैंक थे (जबकि 1873 में 73थे); इनमें से छ: ने 47% कर्ज दिया था जो 1914 में बढ़कर 55% हो गया।

11.11.2 राजस्व और कराधान

विट ने अपनी औद्योगिक नीतियों को बल प्रदान करने के लिए अधिक राजस्व जुटाने और रूबल के अन्तरराष्ट्रीय मूल्य को स्थायित्व प्रदान करने के प्रयत्न किए। 1890 का दशक विदेशों से ऋण लेने के लिए सर्वथा उपयुक्त था क्योंकि ब्याज की दर कम थी; महंगे घरेलू ऋणों के स्थान पर सस्ते विदेशी ऋण लेकर उसने एक बिलियन रूबल की बचत की। विट 1880 के दशक में हासिल किए गए व्यापार संतुलन को बरकरार रखने में कामयाब रहा। इसके लिए उसने संरक्षणवादी कर नीति अपनाई और आयात विकल्प को बढ़ावा दिया। इसके लिए रूसी उद्योग को राज्य ने करों में छूट और मुनाफे की गारंटी के रूप में प्रत्यक्ष समर्थन दिया। 1891 के सीमा-शुल्क, जो उस समय विश्व की तुलना में रूस में सबसे भारी कर था, से केवल चौदह उत्पादों को ही मुक्त रखा गया; यह भी वह उत्पाद थे जिनकी रूस में काफी कम मांग थी। कच्चे माल और उत्पादित वस्तुओं पर ऊंचा आयात शुल्क लगाया गया। इन उच्च शुल्कों के कारण धातु निर्माण उद्योग की उत्पादकता और उत्पादन में वृद्धि हुई और इस प्रकार रूस में मशीन निर्माण उद्योग के उदय को प्रोत्साहन मिला।

परंतु विट के सामने अभी भी दो समस्याएं थीं। रेलवे में राज्य का निवेश काफी हो जाने के कारण उसे अपने बजट को संतुलित करने के लिए आमदनी की भी जरूरत थी। दूसरी ओर रूस की प्रमुख निर्यात-वस्तु अनाज का मूल्य काफी गिर गया जिससे भुगतान संतुलन की स्थिति खराब होने लगी। रूस के घरेलू बजट को संतुलित करने और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए विट ने कर की दर ऊंची कर दी। उसने अप्रत्यक्ष कराधान का सहारा लिया; 1890 के दशक में कुल राजस्व का लगभग आधा अप्रत्यक्ष कर से प्राप्त होता था। इस ऊंचे कराधान का बोझ सबसे ज्यादा गरीब किसानों को उठाना पड़ा; इसीलिए यह कहा भी जाता है कि रूसी औद्योगीकरण की कीमत किसानों को चुकानी पड़ी।

राज्य समर्थित वृद्धि के लिए धन जुटाने हेतु करों और ऋणों की नीति अपनाई जानी थी और दूसरी ओर मुद्रा में स्थायित्व लाने और सोना को मानक के रूप में अपनाए जाने की विधि अपनाई जानी थी। विट रूस में विदेशी पूंजी के आगमन को तेज करना चाहता था। मुद्रा स्फिति से प्रभावित देश को विदेश से ऋण मिलने में कठिनाई होती थी। इसके लिए राज्य द्वारा विदेशी ऋणदाताओं को उनकी पूंजी पर मुनाफे और ऋण पर ब्याज देने की गारंटी देने की जरूरत थी। इसके लिए रूबल को स्वर्ण भंडार का समर्थन भी चाहिए था; इसलिए स्वर्णमानक को अपनाना रूस के लिए अनिवार्य हो गया।

यह 1877 के बाद संभव हुआ जब आयात शुल्क की वसूली कागज के रूबल में न करके सोने के रूप में की जाने लगी। दूसरे, विनिमय नियंत्रण और राज्य के बैंक द्वारा नोट जारी करने से ज्यादा स्वर्ण भंडार रखने की नीति से रूबल खुद स्थिर हो गया। इसके अलावा, भारी कराधान की नीतियों के फलस्वरूप पर्याप्त स्वर्ण भंडार जमा हो गया और अन्तत: 1896 में फसल अच्छी हो जाने से जनवरी 1897 में रूबल स्वर्ण मानक के बराबर हो गया।

इससे कई लाभ हुए। रूबल की विनिमय दर में स्थिरता आई, विदेशों से ऋण लेना आसान हो गया और 1897 और 1913 के बीच हुए विदेशी निवेश का स्तर 1881 और 1897 के बीच हुए निवेश से दोगुना था। परंतु इसके लिए जनता पर करों का अतिरिक्त बोझ लादना पड़ा, जरूरत से ज्यादा अनाज का निर्यात करना पड़ा और रूस के स्वर्ण भण्डार को अचल बना दिया गया।

11.11.3 विदेशी पूंजी की भूमिका

घरेलू स्रोतों की अपर्याप्तता के कारण विदेशी पूंजी की जरूरत शिद्दत से महसूस की गई। रूस में विदेशी पूंजी का तेजी से प्रवेश हुआ और 1914 तक रूस यूरोप का सबसे बड़ा कर्जदार देश बन गया। रूस के राष्ट्रीय ऋण में 1895 में विदेशियों का हिस्सा 30% था जो 1914 में बढ़कर 48% हो गया। राज्य ने संभवत: आधे से ज्यादा विदेशी निवेश का उपयोग रेलवे के विकास के लिए किया। बाकी निवेश उद्योगों, खासकर दक्षिणी खनन और धातु कर्म उद्योगों और काकेशस के तेल उद्योग के साथ-साथ बैंक और व्यापार क्षेत्र में हुआ। 1890 के बाद में फ्रांस और बेलजियम ने रूस में सबसे ज्यादा निवेश किया। रूसी औद्योगीकरण में विदेशी उद्यमशीलता का अध्ययन करने वाले लेखक जे.पी. मैकेके के आकलन के अनुसार 1890 में रूस में विदेशी पूंजी 215 मीलियन रूबल थी जो 1900 में 911, 1910 में 1,358 और 1915 में बढ़कर 2,206 हो गई। नए औद्योगिक निवेशों में इसका योगदान 1890-92 में 33% था जो 1900-02 में बढ़कर 47% और 1909-13 में 50% हो गया। रूस में इस अवधि में इतनी भारी मात्रा में विदेशी पूंजी का प्रवेश क्यों हुआ ? 1850 के बाद यूरोप के बुर्जुआ वर्ग के पास विदेशों में ऋण देने के लिए काफी मात्रा में अधिशेष राशि थी। अन्य देशों की अपेक्षा रूस इस पूंजी को अपनी ओर खींचने में क्यों सफल रहा?

पश्चिमी यूरोप की तुलना में रूस में मुनाफे की दर अधिक थी। सरकार ने कर संरक्षण प्रदान किया था, ऋण और मुनाफे पर गारंटी दी थी तथा मजदूरों द्वारा औद्योगिक कार्यवाई के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करने का वादा किया था। स्वर्ण मानक अपनाने से रूस की साख बढ़ गई थी। इसके अलावा 1890 के दशक में विश्व के अन्य देशों में ब्याज की दर कम होने के कारण रूस में निवेश करना आकर्षक सिद्ध हुआ।

इसमें राजनैतिक कारकों का भी योगदान रहा। उदाहरण के लिए रूस से मित्रता करने के लिए जर्मन और फ्रांसीसी सरकारों ने रूस में निवेश को प्रोत्साहित किया। 1879 जर्मनी के साथ संधि के फलरूवरूप, जिसे ड्रेकेसरबंद के नाम से जाना जाता है,1870 के दशक के उत्तरार्द्ध और 1880 के पूर्वार्द्ध में रूस में जर्मन पूंजी का आगमन तेजी से हुआ। 1894 में फ्रांस के साथ संधि हुई। इसी प्रकार 1907 में ग्रेट ब्रिटेन के साथ समझौता हुआ जिसके कारण रूस में ब्रिटिश पूंजी का तेजी से आगमन हुआ।

चित्र 2 : स्टोलिपियन सुधार : कारखानों में काम मांगते रूसी किसान, 1910

11.11.4 1890 के दशक में औद्योगिक विकास का मूल्यांकन

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में रूस निस्संदेह रूप से एक बड़ी ताकत बन गया था। रूस में कुल विश्व उत्पादन का 6% लोहा और इस्पात का उत्पादन होने लगा जिससे औद्योगिक शक्तियों में इसका स्थान चौथा हो गया; पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर क्रमश: संयुक्त राज्य अमेरिका (42%), जर्मनी (18%) और ग्रेट ब्रिटेन (14%) थे। इसके अनुसार रूस में आधुनिक इंजीनियरिंग उद्योग का निर्माण हो रहा था। इसके साथ-साथ आधारभूत रसायनों जैसे उद्योग भी उभर रहे थे। शहरी जनसंख्या बढ़ने से उपभोक्ता वस्तु उद्योग की भी उन्नति हुई। बड़े पैमाने पर रेलवे के निर्माण के कारण आर्थिक प्रगति हुई, परिवहन की लागत घटी, अन्तरक्षेत्रीय व्यापार बढ़ा और साइबेरिया तथा मध्य एशिया जैसे आर्थिक अवसरों वाले क्षेत्रों में जनता का आवागमन बढ़ा।

परंतु ये सारी उपलब्धियां उद्योग में राज्य के निवेश, किसानों पर करारोपण और पश्चिमी यूरोप से लगातार आनेवाले ऋणों और पूंजी निवेशों की नाजुक नींव पर आधारित था। विट व्यवस्था में, राज्य नीतियों ने कृषि पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया और अपना पूरा निवेश उद्योग पर केंद्रित किया। विट का यह मानना था कि उद्योग की उन्नति होने से इसका कुछ भाग अपने आप 'रिसकर' कृषि तक पहुंच जाएगा और कृषि की उत्पादकता और उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी होगी। इसलिए कृषि क्षेत्र के लिए अलग से नीति बनाने की जरूरत महसूस नहीं की गई। औद्योगिक क्षेत्र में भी उपभोक्ता उद्योगों की अपेक्षा भारी उद्योगों में अधिक निवेश किया गया और ज्यादा संरक्षण दिया गया। ये सब विट व्यवस्था की गंभीर खामियां थीं। कृषि के हितों की रक्षा करने के पक्षधर अधिकारियों और कुलीनवर्गों का विरोध बढ़ता गया। एक स्वायत्त रूसी पूंजीवादी समर्थन के अभाव में यह नीति बहुत दिनों तक नहीं चल सकी।

11.12 1901 से 1914 तक औद्योगिक पूंजीवाद

1890 के दशक का यह उछाल 1901 की मंदी के बाद समाप्त हो गया। सबसे आधारभूत कारण यह था कि 1890 के दशक में किसानों का जीवन स्तर गिर गया था और उनकी कर अदा करने की शक्ति क्षीण हो गई थी। 1897 और 1901 बीच लगातार अनाज का उत्पादन कम हुआ जिससे अनाज उत्पादक इलाके प्रभावित हुए। इससे छुटकारा शुल्क और दूसरे प्रकार का बकाया बढ़ता गया और निर्यात से होने वाली आय में कमी आई। इसका मतलब यह हुआ कि सरकार अब 1890 की दशक की तरह उद्योग में पूंजी निवेश नहीं कर सकती थी जबकि व्यापार और भुगतान संतुलन बुरी तरह प्रभावित हुए थे।

11.12.1 संकट

1899 के मध्य से मुद्रा बाजार की स्थिति विकट हो गई; यही औद्योगिक संकट का तात्कालिक कारण बना। पूरे विश्व में ब्याज की दर ऊपर उठने और अन्तरराष्ट्रीय निवेश का प्रवाह धीमा होने का प्रभाव केवल रूस पर ही नहीं बल्कि पश्चिमी यूरोप पर भी पड़ा। इस औद्योगिक संकट के कारण कई उद्योग दिवालिए हो गए, औद्योगिक मूल्यों में तेजी से कमी आई, खासकर बड़े उद्योगों में उत्पादन अवरुद्ध हुआ और लौह पिंड, लोहा और कच्चे तेल का उत्पादन जरूरत से ज्यादा हो गया। 1902 का वर्ष सबसे खस्ता हाल वर्ष था। इस दौरान लगभग 2400 औद्योगिक इकाइयां बन्द हो गईं जिनमें से एक तिहाई इकाइयां क्रिवोई रोग के खनन क्षेत्र में थीं और बड़े धातु उत्पादक उद्योगों का एक चौथाई हिस्सा बंद हो गया। औद्योगिक बेरोजगारी अब 90,000 तक पहुंच गई। ब्याज दर बढ़ गई और शेयरों के मूल्यों में गिरावट आई। अपने पूंजी भंडार को बचाए रखने के लिए बैंकों ने ऋण पर प्रतिबंध लगा दिया और कार्य पूंजी प्राप्त करना भी कठिन हो गया। 1890 के दशक में भारी उद्योग की जिन शाखाओं में तेजी से विकास हुआ था वही इस मंदी से सबसे ज्यादा प्रभावित हुईं।

इस संकट के कारण 1903 में वित्त मंत्री एस.ईयू. विट को मंत्रालय से निकाल दिया गया। सरकार की औद्योगिक नीतियों के विरोधियों ने इस औद्योगिक संकट को प्रमाण के रूप में पेश करते हुए कहा कि किसान की उपभोक्ता वस्तुओं पर भारी कर लगाने का विचार गलत था और रूसी औद्योगीकरण कृत्रिम था क्योंकि यह मुख्य रूप से सरकारी आदेशों और मांगों पर आधारित था।

11.12.2 एकाधिकार स्थापित करने के तरीके

रूसी उद्योग में संकट आने से उत्पादन और विक्रय को नियंत्रित करने के लिए कई एकाधिकार मूलक उपाय किए गए। प्रत्येक क्षेत्र में इस उद्देश्य के लिए बड़ी कम्पनियों के 'सिंडिकेट' बनाए गए। जिन उद्योगों में विदेशी पूंजी निवेशित थी उनमें यह प्रवृत्ति 1902 के बाद तेजी से विकसित हुई। धातु निर्माण उद्योग में प्रोडामेट (1902); रेलवे वाहनों के लिए प्रोडवैगन (1906), डोनेट कोयले के लिए प्रोडुगोल (1906) इस प्रकार के संगठनों के कुछ उदाहरण हैं। 1914 तक इस प्रकार के 150 से भी ज्यादा संगठन स्थापित हो गए थे और वे न केवल खनन और धातु निर्माण क्षेत्रों को नियंत्रित करते थे बल्कि वस्त्र और चीनी जैसे हल्के उद्योगों को भी नियंत्रित करते थे।

जर्मनी में भी इसी प्रकार के संगठन स्थापित थे जिन्हें 'कार्टेल' के नाम से जाना जाता था। परंतु रूस के इन संगठनों और जर्मनी के इस कार्टेल में कई तरह की असमानताएं थीं। रूस के ये संगठन एक ढीले ढाले संगठन थे जिनका मूल उद्देश्य मूल्यों पर नियंत्रण स्थापित करना और उद्योग विशेष में प्रतियोगिता पर काबू रखना था। उनकी विधियां अलग-अलग थीं। कुछ ने परिवहन और विक्रय लागत बचाने के लिए आदेश आवंटन को अपने हाथ में ले लिया था और कुछ ने ऋण की शर्तों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था। ये सिंडिकेट आमतौर पर बिक्री एजेंसियां होती थीं जो उत्पादन को नियमित करने के लिए न के बराबर हस्तक्षेप करती थीं।

1901 से लेकर 1914 तक औद्योगीकरण की प्रतिवर्ष वृद्धि दर 6% रही। 1901-1903 के संकट ने राज्य के आदेशों और रेलवे निर्माण पर आधारित औद्योगिक नीतियों की कमजोरियों का पर्दाफाश कर दिया क्योंकि इससे उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योग कम प्रभावित हुए। इसी प्रकार युद्ध पूर्व अन्तिम वर्षों से लेकर 1914 तक औद्योगिक पूंजीवाद धीमी गति से और सचेत होकर अलग ढंग से आगे बढ़ा। 1904-1905 में जापान के साथ युद्ध और 1905-1907 की प्रथम रूसी क्रांति के साथ-साथ छुटकारा भुगतानों के उन्मूलन और करों के भुगतान की संयुक्त जिम्मेदारी के सिद्धांत के कारण बजट पर दबाव और भी बढ़ा। रेलवे निर्माण कम हुआ और इसकी गतिविधि धीमी रही।

गेरशेनक्रोन के प्रारूप में राज्य के स्थान पर बैंक उद्योग को वित्त प्रदान करने की प्रमुख भूमिका निभा रहा था और इसके लिए विदेशी निवेश भी जुटा रहा था परंतु इसे प्रमुखत: रूसी कम्पनियों के जरिए निवेशित किया जा रहा था।

1907-8 में मंदी का नया दौर आया जिसने कई औद्योगिक क्षेत्रों को प्रभावित किया। कोयला, लोहा और इस्पात, सूती वस्तुओं और परिशोधित तेल के उत्पादन में कमी आने के साथ-साथ मूल्य में कमी आई और बेरोजगारी में वृद्धि हुई।

11.12.3 1908-13 में हुआ विकास

सभी विद्वान इस बात से सहमत हैं कि 1908-13 के दौरान युद्ध होने के पहले के पांच वर्षों में उद्योग और कृषि के क्षेत्रों में नियमित और प्रभावी वृद्धि हुई। 1908 के बाद रूसी उद्योगों में पुन: तीव्र गति से प्रसार हुआ और 1900 के पहले के मुकाबले कारखानों की उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। 1908 और 1913 के बीच लौह पिंड का उत्पादन 61%, कोयला का 73% और लोहे और इस्पात का उत्पादन 60% बढ़ गया। इसके चलते 1908-13 के बीच बड़े उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि हुई; जो मौजूदा दर पर प्रतिवर्ष औसतन 9% और 1993 के मूल्यों पर 7% थी। यह वृद्धि दर काफी अच्छी थी जो 1890 के दशक में हुई तीव्र वृद्धि के लगभग थी और 1900 और 1907 के बीच अर्जित सामान्य दर (वार्षिक दर मुश्किल से 1.5% पर हो पाई थी) से काफी ज्यादा थी।

1895 और 1905 के बीच की तुलना में 1905 और 1913 के बीच कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई। उपज में यह वृद्धि कृषि क्षेत्र के विस्तार और अधिक उपज देने वाले अनाजों के कारण हुआ, हालांकि अभी भी रूस में उपज कम ही थी। घरेलू और विश्व बाजारों में अनाज और अन्य कृषि उत्पादों का मूल्य औद्योगिक वस्तुओं के मुकाबले ही बढ़ा। अनाज के निर्यात में वृद्धि होने से भी किसान घरेलू उद्योग के लिए बड़ा बाजार प्रस्तुत कर सके।

प्रथम विश्वयुद्ध के पहले उत्पादन, निवेश, मूल्य और मुनाफे में चारो ओर तीव्र गति से वृद्धि हुई। भारी उद्योगों

के उत्पादन में वृद्धि होने से भी सभी क्षेत्र प्रभावित हुए परंतु उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन भी समान गति से हुआ। रबर, जूता-चप्पल, ऊनी वस्त्रों, चर्बी और कुछ खास वस्तुओं में विशेष वृद्धि हुई। वस्तुत: 1913 तक खनन और धातु निर्माण जैसे आधारभूत उद्योगों का नहीं बल्कि उपभोक्ता वस्तुओं का औद्योगिक विकास में वर्चस्व रहा। यहां तक कि औद्योगीकरण के तीन दशकों बाद 1913 तक कुल औद्योगिक उत्पादन में लगभग आधा हिस्सा वस्त्र उद्योग और खाद्य वस्तुओं का था। खनन, धातु निर्माण और इंजीनियरिंग को मिलाकर होने वाले उत्पादन से यह दोगुना था। स्टॉलपिन सुधारों (1905-11) के बाद कम्यून की समाप्ति और संयुक्त भूमि स्वामित्वों और कर अदायगी की संयुक्त जिम्मेदारी के उन्मूलन से श्रम बल में तेजी से वृद्धि हुई और किसानों की वास्तविक आय में बढ़ोत्तरी हुई। उनके द्वारा औद्योगिक वस्तुओं की खरीददारी करने से भारी उद्योगों की अपेक्षा हल्के उद्योगों में मुनाफे की औसत दर ज्यादा नहीं थी।

11.12.4 1914 में रूस

रूस के युद्ध में शामिल होने से इसका आर्थिक विकास बाधित हुआ; इस घटना के एक साल पहले तक रूस मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान देश था। लगभग 85% लोग गांवों में रहते थे और कृषि पर आश्रित थे। कृषि में लगभग 67% लोग रोजगार करते थे और इससे 70% से भी ज्यादा राष्ट्रीय आय होती थी और रूस के पिछड़ेपन, निर्धनता और अज्ञानता का भार भी अनिवार्यत: रूस के किसानों को ही झेलना पड़ता था।

गोल्ड स्मिथ का अनुमान है कि 1860 से 1913 के बीच कुल औद्योगिक उत्पादन प्रतिवर्ष 5% की दर से बढ़ा (कारखाने और शिल्प उद्योग को शामिल करके) और प्रतिव्यक्ति उत्पादन में लगभग 3.5% की वृद्धि हुई। उस समय लगभग 50 वर्षों तक वृद्धि की इस ऊंची दर को बनाए रखना कठिन कार्य था। हालांकि रूस की आर्थिक मजबूती का आधार कृषीय मजबूती ही रही। कृषि वह आर्थिक क्षेत्र था जहां न तो पर्याप्त राज्य और देशी पूंजी लगाई गई और न ही प्रमुख प्रौद्योगिकियों और अन्य विधियों का इस्तेमाल हुआ।

1914 तक रूस में औद्योगिक क्षेत्र बड़े रूप में मौजूद था। यह औपनिवेशिक या समकालीन अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के समान केवल एक 'एनक्लेव' नहीं थे। ये बाजार और देश की अर्थव्यवस्था से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। वस्तुत: रूस में 'दुहरा' औद्योगिक क्षेत्र था जिसमें बड़े कारखाने और उत्पादन के छोटे किसान तथा शिल्पी संगठन भी शामिल थे। रूसी अर्थशास्त्री एस. जी. स्टरमिलिन के अनुसार यहां तक कि 1890 के दशक तक भी छोटे औद्योगिक उत्पादन का मूल्य दोगुना हो गया जबकि बड़े पैमाने के उत्पादन में तीन गुनी वृद्धि हुई। इस दुहरे औद्योगिक क्षेत्र में ग्रामीण आधारित उत्पादन का अनुपात ज्यादा रहना अर्थिक पिछड़ेपन को ही दर्शाता है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर तुलना करने से पता लगता है कि रूस अभी भी एक अल्प विकसित देश था जो आर्थिक पिछड़ेपन का एक और संकेतक था। आर्थिक विकास की दर मापने का सबसे सरल आधार प्रति व्यक्ति आय थी। 1913 में यूनाइटेड स्टेट्स और ग्रेट ब्रिटेन सबसे विकसित औद्योगिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाएं थीं। उस समय रूस की प्रतिव्यक्ति आय इन देशों की तुलना में एक तिहाई थी। जर्मनी रूस का आर्थिक आदर्श, उदाहरण और प्रतिद्वंद्वी था। इसकी तुलना में रूस की प्रतिव्यक्ति आय आधी थी।

बोध प्रश्न 2

1) देर से औद्योगीकरण की शुरुआत की भरपाई के लिए विट ने क्या रणनीति अपनाई?

....

....

....

....

....

....

2) 1890 के दशक के औद्योगिक उछाल की क्या सीमाएं थीं?

....

....

....

....

....

....

3) बीसवीं शताब्दी के आरंभ में औद्योगिक संकट का सामना करने के लिए 'सिंडीकेटों' ने क्या कदम उठाए?

....

....

....

....

....

....

4) 1914 तक रूसी औद्योगिक अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं क्या थीं ?

....

....

....

....

11.13 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि रूस का औद्योगिक पूंजीवाद किस प्रकार लगातार देश के आर्थिक पिछड़ेपन से जूझता रहा। इस प्रक्रिया में राज्य ने विशेष भूमिका अदा की जिसने 'कृषिदासों की मुक्ति' के द्वारा श्रम बल जुटाने का प्रयास किया। निवेश के लिए विदेशी पूंजी लाने के लिए नीतियां बनाईं और औद्योगिक केंद्रों की स्थापना की दिशा में प्रयास किए। हालांकि, जैसा कि हमने देखा, इस औद्योगीकरण का बोझ किसानों पर पड़ रहा था और कृषि क्षेत्र में अपर्याप्त वृद्धि से पिछड़ापन बना रहा।

11.14 शब्दावली

अनिवार्य श्रम नजराना : रूस में कृषिदास किसी भूमिपति के खेतों या व्यक्तियों से बंधे होते थे और नजराने के रूप में उन्हें अनिवार्य श्रम करना होता था।

विकल्प का सिद्धांत : गेरशेनक्रोन के अनुसार औद्योगीकरण के लिए जरूरी मुक्त श्रमिक और पूंजी उपलब्धता जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति कई 'विकल्पों' से हो सकती है। जैसे रूस में राज्य ने 'विकल्प' की प्रमुख भूमिका निभाई और श्रम तथा पूंजी उपलब्ध कराई।

एकाधिकार : एक औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति जहां एक फर्म या कई फर्म मिलकर उत्पादन के स्रोतों के साथ-साथ बाजार पर भी नियंत्रण रखते हों।

सिंडिकेट : रूस में कम्पनियों के समूह जो उद्योगों पर आर्थिक संकट का सामना करने और एकाधिकार स्थापित करने लिए बनाए गए थे।

11.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 11.2 देखें। इसमें आप जलवायु संबंधी उन परिस्थितियों का उल्लेख कर सकते हैं जिनके कारण

साल में ज्यादा समय तक खेती नहीं की जा सकती और इन दिनों चारागाह भी उपलब्ध नहीं होते थे। इसके कारण आनाज का उत्पादन कम होता था और पशुधन का भी अधिशेष उत्पादन नहीं होता था। आप यह भी लिख सकते हैं कि रूस के महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत, जैसे कच्चा लोहा और कोयला, रूसी साम्राज्य के सीमांत प्रदेशों में स्थित थे जहां जाने के लिए परिवहन के उपयुक्त साधन उपलब्ध नहीं थे। रेलवे के आगमन के बाद ही इन क्षेत्रों में आसानी और तीव्रता से आवागमन संभव हुआ और इन संसाधनों का भरपूर उपयोग हो सका।

2) देखिए भाग 11.4 किसान अब उद्योगों और व्यापार में अधिक मुक्त रूप से काम कर सकते थे और मुनाफा कमा सकते थे। दूसरे, मुद्रा अर्थव्यवस्था का क्षेत्र विस्तृत हुआ क्योंकि छुटकारा शुल्क का भुगतान नगदी हो सकता था। इसका एक निषेधात्मक पक्ष यह था कि इससे किसानों पर भारी छुटकारा शुल्क का कर बोझ बढ़ा। इसका नतीजा यह हुआ कि कृषि क्षेत्र से एकतरफा वसूली होती रही जिसमें से बहुत कम हिस्सा वापस कृषि क्षेत्र में लगाया गया और अधिकांश धन भूमिपतियों की थैली भरता रहा। राज्य ने अप्रत्यक्ष कर बढ़ाया जिससे किसानों पर तो बोझ पड़ा पर प्रधान उद्योगों को वित्तीय पूंजी अवश्य प्राप्त हुई, परंतु दूसरी ओर ऋण और कर के बोझ के कारण श्रम गत्यात्मकता बाधित हुई।

3) देखिए भाग 11.6 शब्दावली भी देखिए।

4) देखिए भाग 11.10 यूरोप में शांति और औद्योगीकरण के संबंध में सरकारी नीति की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 11..11 इसमें आप विट द्वारा भारी उद्योग वृद्धि की तीव्र गति, सीमा-शुल्क संरक्षण, आदि पर बल दिए जाने का उल्लेख कर सकते हैं।

2) देखिए उपभाग 11.11.1 मुद्रा बाजार में आए संकट की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा आप कर सकते हैं।

3) देखिए उपभाग 11.12.2 आप ऋण के नियंत्रण, परिवहन के एकाधिकार आदि जैसे उपायों का उल्लेख कर सकते हैं।

4) देखिए उपभाग 11.12.4

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

इ. जे. हाब्सबॉम: **इन्डस्ट्री एंड एम्पायर**, पेंग्विन
जे.आई.टी बरी: **फ्रांस 1814-1890** (लंदन 1969)
डब्ल्यू कार: **हिस्ट्री ऑफ जर्मनी 1815-1945** (लंदन, 1979)
जी. स्टीफेनसन: **ए हिस्ट्री ऑफ रशिया 1812-1945** (लंदन, 1969)